वना ४

क् स्मर्केरी। विवाप विवान्य ग्रीधी द्वनीश् म्बरीवृषा॥ ५७॥ पत्यक्ष्रेगीसुनश्रमीरगडामू विकपरार्थि। अपामार्गः शेखरिकाधामा र्गवमयूरका॥ ==॥ प्रत्यक्पर्याकिशिश् पणीकिणिहीखरमञ्जरी। फिचिकाचा ह्याणेपद्माभागीवा ह्यायाष्ट्रिका॥ ५०॥ अङ्गारवह्नी बालेयशाकवर्वर्वाः। मंजिछाविकसाजिङ्गीसमङ्गाकालमेषिका ॥ ए॰॥ मग्डूकपस्पिग्डोरीभग्डोयोजनवद्ध्यपि। यासायवासा दुस्पर्शिधन्वयासः कनाश्वः॥ ए१॥ रोदनीक च्छ्राननासमुद्राना दुरालभा। पृम्मिपराष्ट्रियक्पराष्ट्रिवचपराधिङ्घविच्नपा। ए२॥ क्रास्त विनासिंह पुक्को का लि शिद्धावनिगृहा। निदिगिधका स्पृश्विया घ्रोवृह्ती क एट का रिका॥ ए३॥ य चोद नी कुली शुद्रादुः स्पर्शा एष्ट्रिकेत्य पि। नी लोबालाक्वी तिकवाग्रामी गामध्य शिका॥ ए४॥ रञ्जनीश्रीफलीन्या देशिदा सा चनी सिनी। अवला जः साम गजी सुव हनी साम व हिन का ॥ ए५॥ का समेषी क्वा स्मापाना वागुजीपू निफ ल्यपि। क्रा स्नाप कुल्या वैदेहीमागधीचपलावणा॥ एह्॥ उष्रणापिपली शेग्डी केला ऽथक रिपिप्पनी। कपिवह्मीका लबङ्मीश्रेयसीविसरः प्रमान्।। ए ७॥ च व्यन्त चिवंबीगुञ्जेतृक छाला। पलंबषात्विधुगन्धा मुदंष्टी खादुकरकः ॥ ए = ॥ गार्करकोगाक्षुर्वेवन मृङ्गारइत्यपि। वि स्याविषाप्रतिविषाप्रतिविषाप्रतिषाऽरूणा॥ एए॥ स्रृंगोमद्भाषधंचायक्षी